ISSN: 2347-9892

शोध-प्रज्ञा

(अर्द्धवार्षिक-मूल्यांकित-शोधपत्रिका)

तृतीय वर्षस्य, प्रथमोऽंकः दिसम्बर, 2015

प्रधान - सम्पादकः
प्रो. महावीर अग्रवालः
कुलपतिः

सह - सम्पादकौ
डॉ. लक्ष्मी नारायण जोशी
डॉ. रामरतन खण्डेलवालः

वयं देवानां सुमतौ स्याम

उत्तराखण्ड-संस्कृत-विश्वविद्यालयः
हरिद्वारम् (उत्तराखण्डम्)

Scanned with CamScanner

वैदिक साहित्य में विज्ञान

प्रो. अर्चना दुबे
श्री सोमनाथ संस्कृतविश्वविद्यालय
वेरावल,गुजरात

साक्षात्कृत धर्मा ऋषियों की अमर कृति वेद न केवल ज्ञान का अपितु विज्ञान का भी अपूर्व भण्डार है। ज्ञान और विज्ञान की अजस्र धारा जब तक प्रवाहित रही तथा वेदाध्ययन में दोनों का समुचित महत्त्व सम्मुख रहा, भारत जगद्गुरु की महिमा से गौरवान्वित रहा। विज्ञान से अधिक की उत्पत्ति की जानकारी प्राप्त कर जीवन में व्यावहारिक क्षेत्र में उतरना ही विज्ञान का विषय है। अनेकत्व में अन्तर्निहित एकता की खोज एवं उसका दिग्दर्शन मोक्ष अथावा कैवल्य का कारण जिसका विषय ब्रह्म है।

वैज्ञानिकों के अनुसार समस्त ब्रह्माण्ड का रचयिता एक Primodial Cuase है, जो अव्यय है। जिससे शक्ति उत्पन्न होती है। यह शक्ति अदृश्य होने पर भी अपने प्रभाव का ज्ञान, अनेक रूपों में कराती है। जो शक्ति विद्युत् के रूप में प्रकट होती है। उसको खण्डित नहीं किया जा सकता, यह अक्षय होती है। इस शक्ति का क्षय हो सकता तो सूर्य की किरणों में जो हानिकारक तत्व है, जिससे त्वचा कैंसर इत्यादि रोग होते हैं, उनको वहीं से अवरूद्ध कर इस रोग से संरक्षित हो सकते थे। ओजोन की परत सूर्य की सीधी पड़ने वाली किरणों में हानिकारक तत्त्वों से बचाती थी, किन्तु उसमें छेद हो जाने के कारण अनेक दुष्प्रभाव परिलक्षित हो रहे हैं। विज्ञान में अदृश्य शक्ति अक्षय है, उसी प्रकार वेद भी अक्षय है। टुकड़ों में शक्ति जायेगी अर्थात् आधुनिक Relativity Quantum & Mechanie ने वैज्ञानिकों की प्राचीन मान्यताओं में अनेक परिवर्तन ला दिये हैं।

Relativity Quatum

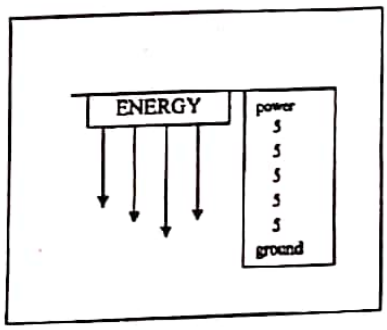

इसी प्रकार सांख्य दर्शन के अनुसार पुरुष अनेक हैं। इसी नाना रूपात्मकता से Matter (पदार्थ) बनता है। यही प्रकृति की विकृति है।[1] पदार्थ के विघटन को क्षर कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

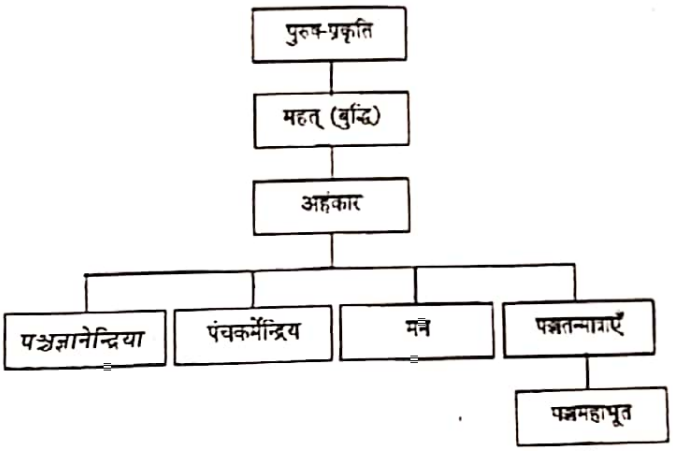

'थ्यौरी ऑफ रिलेटिविटी' के आधार पर गणित द्वारा यह सिद्ध है कि कोई व्यक्ति विमान में प्रकाश की गति से सवार है तो उसका समय पृथ्वी के समय से कई गुना कम होगा।

पृथ्वी नामक ग्रह की गति अन्य ग्रहों चन्द्रमा, मंगल आदि से तीव्र है। विमान की गति कम होगी, क्योंकि जिस ग्रह पर जा रहा है उसकी गति पृथ्वी से कम है। पृथ्वी अन्य ग्रहों से आगे चलती है।

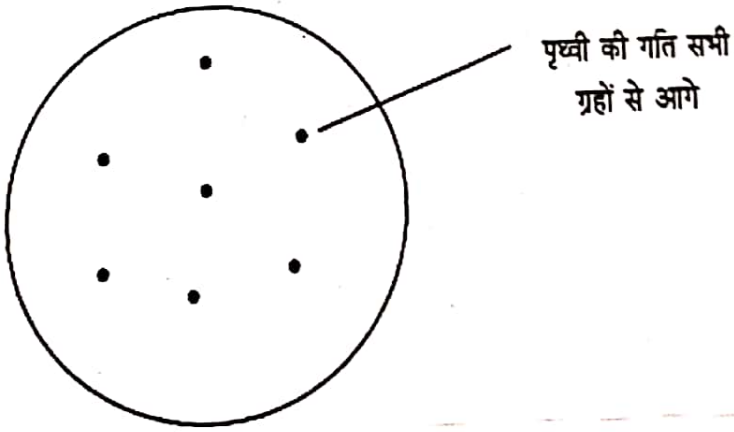

सौर मण्डल

हनुमान, नारद आदि देवताओं के उड़ने का प्रसंग आता है। प्रकृति की चार शक्तियाँ अर्थात् ऐलीमेन्ट्री फोर्सेस।

ग्रैविटेशनल फोर्सेस 'गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त' किसी भी वस्तु को फेंकते हैं, तो वह नीचे आकर गिरती है। पृथ्वी अपनी ओर खींचती है। इलेक्ट्रो मैनेटिक फोर्स, स्ट्रॉंग एण्ड वीक इलेक्ट्रोनिक फोर्स।

Scanned with CamScanner

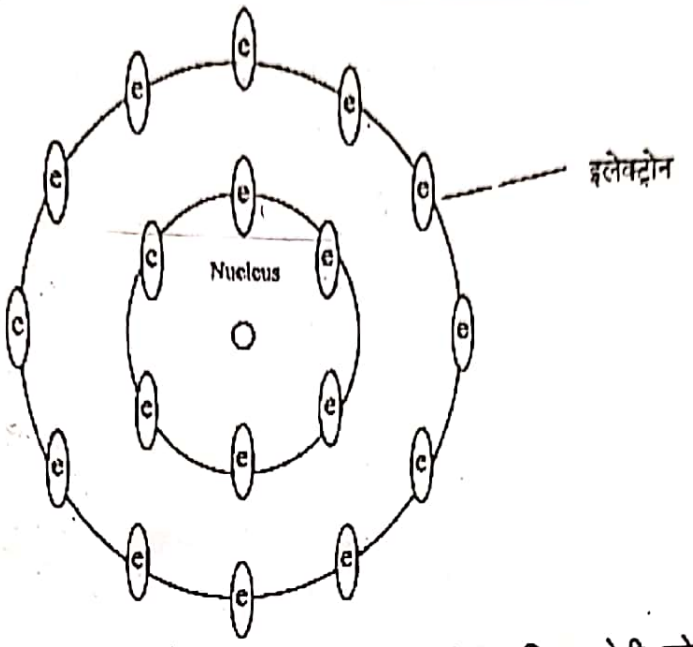

परमाणु के पास जो इलेक्ट्रॉन जितना निकट रहेगा शक्ति अधिक रहेगी जो इलेक्ट्रॉन जितना दूर रहेगा शक्ति कम होती जायेगी।

युनिटि फोर्स होने की संभावना का अनुसंधान चल रहा है। मन, प्राण और वाक् त्रिधातु रूपी प्रजापति से युक्त इस जगत् को पं. ओझाजी अणु रूप तथा स्कन्ध रूप मानते हैं। त्रिधातुओं का प्रथम मेल परमाणु रूप में हुआ, पुनः परमाणुओं के पारस्परिक संयोग से जो बश्हत् रूप हुआ उसे स्कन्ध नाम दिया गया है।[1]

पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य देवलोक भी है।

उड़नतश्तरियों के पृथ्वी पर गिरने की बात चलती है। जैसे 'कोई मिल गया' चलचित्र में सजीव चित्रण किया गया है। यू.एफ.ओ. की बात अभी ताजा खबर है। वैज्ञानिकों के परीक्षण से ज्ञात हुआ कि एक चर्मपत्र (पाण्डुलिपि) पर पुस्तक लिखी है। उसकी भाषा देववाणी से मिलती जुलती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि देवलोक में या अन्य लोकों में देवता रहते थे। जो हम पर अमोघ वरदान की वृष्टि रूपी पुष्प बरसाते हैं। हम पूजा–पाठ, यज्ञ–हवन, सुन्दरकाण्ड आदि करते हैं तो हमें ऐसा लगता है कि बजरंगबली उड़ते–उड़ते हमारे दिल में नगीने में चित्रित हो गये हैं।

अभि प्रवन्त समनेव योषाः
कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्।
कृतस्य धाराः समिधो नसन्त
ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः।।[2]

इस मंत्र में यास्क ने विद्युत् का विज्ञान और जल से इसका उद्भव बताया है। विद्युत् और उसकी उत्पत्ति आदि का परिचय वेद में स्पष्ट हैं। वर्तमान का विज्ञान विद्युत् पर सबकुछ अवलम्बित करता हुआ भी अभी तक इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाया कि विद्युत् वस्तु क्या है। मैटर है या नहीं? वेद ने इसे इन्द्र देवता का रूप मानते हुए इसका प्राण–विशेष, शक्ति–विशेष (एनर्जी), अनमैटेरियल होना स्पष्ट उद्घोषित कर दिया है। जिस सिद्धान्तों का आविष्कार वैज्ञानिकों के लिए अभी शेष है, वे वेदों में पूर्व में ही प्रतिपादित किये जा चुके हैं।

Scanned with CamScanner

शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक दृष्टि से प्रति क्षण सूर्य का सम्बन्ध हमारे जीवन से रहता है। संसार की सारी वनस्पतियां उन सूर्य किरणों द्वारा ही पुष्ट होती हैं। जिनके सहारे हम लोग जीवन धारण करते हैं। गायें घास या सब्जियों को कार्बोहाइड्रेट में परिणत कर हमें पोषित करती हैं। मकर–संक्रान्ति में सूर्य देव का रथ मकर राशि में प्रवेश करता है। हर महीने संक्रान्ति होती है लेकिन इस महीने में सूर्य नारायण मकर राशि में प्रविष्ट होते हैं, इसीलिए वे कुछ विलक्षण पुण्य काल का सर्जन करते है। इस काल में सत्त्व गुण की विशेष अभिवृद्धि होती है। रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ाने वाले कण भी विशेष मिल जाते हैं। डॉ. हेज हैण्ड्रिक ने प्रयोगों से पाया कि सूर्य की किरणें शीघ्र ही शरीर में प्रविष्ट होकर रोग प्रतिकारक शक्तियां बढ़ाती हैं जिस रंग की कमी हो उसकी पूर्ति करती है। रंग–चिकित्सक (गार्डनर रोनी) का कहना है कि सूर्य चिकित्सा से बहुत सारे मरीज ठीक कर दिये गये हैं। डॉ. हेज ह्यूकी ने कहा है कि "दवाओं से भी अधिक फायदा सूर्य की किरणों से होता है। दवाओं से तो हानिकारक जीवाणुओं के साथ–साथ हितकारी जीवाणु भी नष्ट हो जाते हैं।"[3] सूर्य की किरणों से हमें न केवल रोशनी, उष्णता व स्वास्थ्यप्रद विटामिन डी की साक्षात् प्राप्ति होती अपितु टॉनिक भी प्राप्त होता है। इससे शरीर की संरचना, हड्डियां और दाँत इत्यादि के निर्माण में सहायक होते हैं।

सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्र
मेको अश्वो वहति सप्तनामा।
त्रिनाभि चक्रमजरमनर्व
यत्रेमा विश्वा भुवनानि तस्थुः।।[4]
ये सात अश्व ही सात दिन हैं।

वेदों में 12 आदित्यों का वर्णन है। आज विज्ञान ने मान लिया है कि 12 सूर्यों का तो पता चला है, किन्तु बाकी कितने हैं यह नहीं कहा जा सकता। यह सिद्ध है कि इन 12 आदित्यों में जो हमसे निकट है। वे ही सूर्य है, जिन्हें हम देखते हैं। पर सभी आदित्यों में यह सबसे छोटे हैं। वर्तमान विज्ञान कहता है कि ग्रहों में सूर्य सबसे बड़े और प्रकाशमान होते हुए भी वास्तव में संबसे छोटे और धुंधले हैं। यह अपने निकटतम तारे से कम से कम 3,00,000 गुना अधिक दूर हैं। सत्रहवीं सदी में जॉन केपलर ने यह हिसाब लगाया था। जो भारतीय वैज्ञानिक मेघनाद शाहा, विदेशी वैज्ञानिक ऐडिंगटन, जीन्स, फालर, एडवर्ड आर्थर, भगवान् सूर्य के सम्बन्ध में बहुत छानबीन तथा खोज कर डाली है।

1. सूर्य का व्यास 8,80,000 मील है। अर्थात् वह पृथ्वी से लगभग 110 गुना बडा है।
2. सूर्य का भार पृथ्वी के भार से लगभग 3,33,000 गुना अधिक है। यदि समस्त सौर मण्डल के ग्रहों के भार को सम्मिलित कर लिया जाय तो सूर्य का भार समस्त ग्रहों के भार से एक हजार गुना अधिक है।
3. सूर्य से पृथ्वी की दूरी 9 करोड़ 28 लाख 70 हजार मील है।
4. सूर्य के प्रतिवर्ग इंच पर 20,00,00,00,000 मनका दबाव है तथा इसका तापक्रम 4,00,00,000 अंश हैं।
5. सूर्य के केन्द्र भाग का तापमान 16,00,00,000 सेंटीग्रेड है।
6. प्रकाश किरणों को पृथ्वी तक पहुँचने में 8 मिनट 18 सैकेण्ड का समय लगता है।
7. एक वर्ष में प्रकाश 14,63,00,00,00,000 किलोमीटर की यात्रा करता है।
8. सूर्य से आकाशगंगा के केन्द्र की दूरी लगभग 30,000 प्रकाश वर्ष है।

Scanned with CamScanner